'बचपन में वाहन बने, पकड़ चलाया हाथ'

ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

चञ्चरीक चुम्बक सदृश, लौह गन्ध-मकरन्द ।
मन पसन्द गुण ढूँढ़कर, पाये परमानन्द ।।

गुण ऐसे पैदा करो, आकर्षित हों लोग ।
चुम्बक से चिपके रहें, यथा लौह संयोग ।।

दादा-दादी का नहीं, अब आँगन में प्यार ।
उड़े सभी संस्कार-खग, तरु बिन हैं बेज़ार ।।

वृथा बड़प्पन गुण बिना, यथा जलधि तट पास ।
वृहदरूप जलराशि भी, बुझा न पाया प्यास ।।

वृद्धावस्था में नहीं, तजो मातु-पितु साथ ।
बचपन में वाहन बने, पकड़ चलाया हाथ ।।

सभी जगह सब काल जो, खोज सके तरकीब ।
नहीं रहे हैं विश्व में, ऐसे मनुज गरीब।।

रोग,मौत,शिशु,वक्त,ग्रह, अनुमति से क्या काम ।
ये पाँचों स्वच्छन्द हैं, रहते बिना लगाम ।।

अनुमति लेना ठीक है, घिघियाना है व्यर्थ ।
स्वाभिमान से कब करे, कोई सुलह समर्थ ।।

अन्धभक्ति में सर्वथा, तर्क दिखे प्रतिलोम ।
गुणागार ग्रह ग्राह्यते, बिना वृक्ष फल-व्योम ।।

निन्दा-वारिधि में लगा, ज्यों ही गोता एक ।
दिव्य दृष्टि से दिख गये, सबके दोष अनेक ।।

शंख बजाना चाहिए, बजा रहे हैं गाल ।
व्यर्थ मोह मिथ्या जगत, कह-कह लूटें माल ।।

शंख बजा घण्टा बजा, बजा बहुत घड़ियाल ।
जो सोया जागा नहीं, जागा करे कमाल ।।

सन्तोष कुमार 'माधव'
पिता - श्री रामदास प्रजापति
माता - श्रीमती सियाप्यारी प्रजापति
जन्मतिथि - 28/07/1980
शिक्षा - परास्नातक(हिन्दी,अंग्रेजी) बी.एड.
व्यवसाय - शिक्षक
प्रकाशित पुस्तकें -
1-**माधव पञ्चामृत**(काव्य संग्रह),
2-**अन्तर्ध्वनि**(काव्य संग्रह),
3-**पयस्विनी**(कुण्डलिया शतक),
4-**आहुति** (ईबुक),
5-**अरोधन** (एकलव्य खण्डकाव्य) ।
साझा संग्रह - मानक कुण्डलियाँ, निहारिका,ये दोहे गूँजते हैं,ये कुण्डलियाँ बोलती हैं,आद्विका, आदीप्ता,भारत के इक्कीस परमवीर, काव्यमुक्ता,नव अभिव्यक्ति,कृष्ण काव्य पीयूष,भारत के भारत रत्न, उनसे इश्क़ करके आदि ।

सम्मान - ऑनलाइन व ऑफलाइन मिलाकर 500 से अधिक ।
ईमेल आईडी - santoshkumarkabrai005@gmail.com
सम्पर्क सूत्र - 9695947153, 7905114152
पता - कस्बा/पोस्ट - कबरई (सुभाष नगर),तहसील - महोबा, जिला - महोबा (उ.प्र.) पिन - 210 424